

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **AUGUST 8, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaiias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaiias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्र. 1. मुगलों के अधीन जागीर प्रणाली के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन-I: मनसबदार को सौंपी गई जागीर **हस्तांतरणीय** (transferable) और **गैर-वंशानुगत** (non-hereditary) प्रकृति की थी।

कथन-II: जागीरदार के राजस्व अधिकार **पूर्ण** (absolute) थे और इसमें **भूमि और किसानों पर स्वामित्व** (ownership over land and peasants) शामिल था।

निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

- (a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है
- (b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं लेकिन कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है
- (c) कथन-I सही है लेकिन कथन-II गलत है
- (d) कथन-I गलत है लेकिन कथन-II सही है

उत्तर: (c)

व्याख्या:

मुगल जागीर प्रणाली के तहत, जागीरें वेतन के बदले दिए गए राजस्व असाइनमेंट (revenue assignments) थे। वे मुख्य रूप से स्थानीय शक्ति केंद्रों के उदय को रोकने के लिए हस्तांतरणीय और गैर-वंशानुगत थे, जो कथन-I को सही बनाता है। हालांकि, जागीरदारों के पास भूमि या किसानों पर स्वामित्व अधिकार नहीं थे; भूमि राज्य की संपत्ति बनी रही, और किसानों के पास अधिभोग अधिकार (occupancy rights) थे। जागीरदार केवल राज्य के एजेंट के रूप में राजस्व एकत्र करते थे। इसलिए, कथन-II गलत है।

प्र. 2. पर्यावरण अर्थशास्त्र (environmental economics) में "पारिस्थितिक ऋण" (Ecological Debt) शब्द को निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे अच्छे से समझाता है?

- (a) ऐतिहासिक औद्योगिक उत्सर्जन के लिए विकसित देशों पर लगाया गया स्थायी वित्तीय दायित्व
- (b) किसी देश के पारिस्थितिक पदचिह्न (ecological footprint) का उसकी जैव-क्षमता (biocapacity) से अधिक होने के कारण प्राकृतिक पूंजी का शुद्ध क्षरण (net depletion)
- (c) अंतर्राष्ट्रीय जलवायु वित्त तंत्र (international climate finance mechanisms) के माध्यम से भुगतान किए गए निम्नीकृत पारिस्थितिक तंत्रों को बहाल करने की लागत
- (d) सतत संसाधन उपयोग का अंतर-पीढ़ीगत नैतिक दायित्व

उत्तर: (b)

व्याख्या:

पारिस्थितिक ऋण (Ecological Debt) उस स्थिति को संदर्भित करता है जब किसी देश का पारिस्थितिक पदचिह्न उसकी जैव-क्षमता से अधिक हो जाता है, जिसका तात्पर्य है कि वह अपने पारिस्थितिक तंत्रों की पुनरुत्पादन क्षमता (regenerate) से अधिक प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का उपयोग कर रहा है। यह पारिस्थितिक

पदचिह्न विश्लेषण (Ecological Footprint Analysis) और अर्थ ओवरशूट अध्ययन (Earth Overshoot studies) में एक मुख्य अवधारणा है।

विकल्प (a) **मानक-आधारित** (normative) है, (c) **वित्तपोषण तंत्रों** से संबंधित है, और (d) **नैतिक** है लेकिन यह आर्थिक परिभाषा नहीं है।

प्र. 3. नीति आयोग (NITI Aayog) के संस्थागत और कार्यात्मक विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नीति आयोग को अनुच्छेद 280 के तहत वित्त आयोग के समान संवैधानिक दर्जा प्राप्त है।
2. योजना आयोग के विपरीत, नीति आयोग के पास राज्यों को धन आवंटित करने की शक्तियाँ नहीं हैं।
3. नीति आयोग की शासी परिषद (Governing Council) में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और विधानमंडल वाले केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल शामिल होते हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

1. **गलत** – नीति आयोग एक **गैर-संवैधानिक, कार्यकारी निकाय** है जिसे 2015 में एक **कैबिनेट संकल्प** द्वारा बनाया गया था, जो संवैधानिक रूप से अनिवार्य **वित्त आयोग** से अलग है।
2. **सही** – नीति आयोग **वित्तीय आवंटन शक्तियों** के बिना एक **थिंक टैंक** है; निधि का वितरण (fund devolution) **वित्त आयोग** द्वारा किया जाता है।
3. **सही** – शासी परिषद में **सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और विधानमंडल वाले केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल** शामिल होते हैं, जो **सहकारी संघवाद** (cooperative federalism) सुनिश्चित करता है।

इस प्रकार, **दो** कथन सही हैं → विकल्प (b)।

प्र. 4. भारत के राष्ट्रपति की अध्यादेश जारी करने की शक्ति (Ordinance-Making Power) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक अध्यादेश तभी जारी किया जा सकता है जब संसद के दोनों सदन सत्र में न हों।
2. एक अध्यादेश का बल और प्रभाव संसद के एक अधिनियम के समान होता है।
3. एक अध्यादेश संसद की विधायी क्षमता (legislative competence) से परे के मामलों पर जारी किया जा सकता है।

4. अध्यादेशों को संसद के समक्ष रखे बिना उन्हें पुनः प्रख्यापित (Re-promulgation) करना सर्वोच्च न्यायालय द्वारा असंवैधानिक ठहराया गया है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या:

1. सही – अध्यादेश तभी जारी किया जा सकता है जब लोकसभा और राज्यसभा दोनों सत्र में न हों।
2. सही – अनुच्छेद 123 एक अध्यादेश को संसद के अधिनियम के समान कानूनी बल देता है।
3. गलत – अध्यादेश संसद की विधायी क्षमता से परे के मामलों पर जारी नहीं किए जा सकते हैं।
4. सही – डी.सी. वाधवा बनाम बिहार राज्य और बाद के निर्णयों में, सर्वोच्च न्यायालय ने बार-बार पुनः प्रख्यापन (repetitive re-promulgation) को संविधान पर एक धोखा (fraud on the Constitution) बताते हुए उसकी निंदा की।

इस प्रकार, तीन कथन सही हैं → विकल्प (c)।

प्र. 5. अभिकथन-कारण प्रकार (Assertion–Reason Type) –

अभिकथन (A): क्यूमुलोनिम्बस बादल (Cumulonimbus clouds) भारी वर्षा और ओलावृष्टि (hailstorms) और बवंडर (tornadoes) जैसी गंभीर वायुमंडलीय गड़बड़ी दोनों उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं।

कारण (R1): वे संवहन (convection) के माध्यम से गर्म, नम हवा के मजबूत ऊर्ध्वाधर उत्थान (strong vertical uplift) के कारण बनते हैं।

कारण (R2): वे मुख्य रूप से कम लैप्स रेट (low lapse rates) के साथ स्थिर वायुमंडलीय परिस्थितियों (stable atmospheric conditions) में विकसित होते हैं।

निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

- (a) A सही है, R1 सही है, R2 सही है और R1 तथा R2 दोनों A की व्याख्या करते हैं
- (b) A सही है, R1 सही है, R2 गलत है
- (c) A गलत है, R1 सही है, R2 सही है
- (d) A सही है, R1 गलत है, R2 गलत है

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **अधिकथन (A) सही है:** क्यूमुलोनिम्बस बादल गरज के साथ बारिश, बादल फटने, ओलावृष्टि, बिजली और बवंडर के लिए जिम्मेदार होते हैं।
- **R1 सही है:** वे गहन संवहन और गर्म, नम हवा के मजबूत ऊर्ध्वाधर उत्थान के कारण बनते हैं।
- **R2 गलत है:** ये बादल उच्च लैप्स रेट के साथ अस्थिर वायुमंडलीय परिस्थितियों (unstable atmospheric conditions) में बनते हैं, स्थिर परिस्थितियों में नहीं।

इसलिए, सही उत्तर विकल्प (b) है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्र. 1. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के, भारत के विदेशी मुद्रा विनिमय ढाँचे (Foreign Exchange Framework) के वर्गीकरण को बदलने के हालिया प्रस्ताव के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन-I: भारत को अपनी बढ़ी हुई पूंजी खाता खुलापन (increased capital account openness) और भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा लगातार बाजार-आधारित हस्तक्षेपों (frequent market-based interventions) के कारण अधिक उदार विनिमय दर व्यवस्था (more liberalized exchange rate regime) के तहत पुनर्वर्गीकृत किए जाने की संभावना है।

कथन-II: IMF वर्गीकरण के तहत, भारत को वर्तमान में मुक्त रूप से तैरती विनिमय दर प्रणाली (freely floating exchange rate system) वाले देश के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

- (a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है
- (b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं लेकिन कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है
- (c) कथन-I सही है लेकिन कथन-II गलत है
- (d) कथन-I गलत है लेकिन कथन-II सही है

उत्तर: (c)

व्याख्या:

IMF, भारत के घोषित नीति के आधार पर नहीं, बल्कि वास्तविक विनिमय दर व्यवहार (de facto exchange rate behavior) के आधार पर उसके वर्गीकरण को संशोधित करने पर विचार कर रहा है। भारत वर्तमान में प्रबंधित फ्लोट (managed float) का अनुसरण करता है, न कि मुक्त रूप से तैरती प्रणाली का, जिससे कथन-II गलत हो जाता है।

भारत के बढ़ते पूंजी प्रवाह, बाजार-निर्धारित दरें और अंशांकित पूंजी खाता उदारीकरण (calibrated capital account liberalization) संभावित पुनर्वर्गीकरण को न्यायोचित ठहराते हैं, जिससे कथन-I सही हो जाता है।

प्र. 2. हाल ही में खबरों में रहा INS माहे, का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है:

- (a) प्रोजेक्ट-17A के तहत एक अग्रिम पंक्ति का स्टील फ्रिगेट
- (b) द्वीप क्षेत्रों के लिए एक नया भारतीय नौसेना रसद सहायता पोत
- (c) अंडमान और निकोबार कमान के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक नौसेना वायु एन्क्लेव (Naval Air Enclave)
- (d) पश्चिमी नौसेना कमान के तहत एक मिसाइल परीक्षण रेंज

उत्तर: (c)

व्याख्या:

आईएनएस माहे लक्षद्वीप में स्थित एक नौसेना वायु एन्क्लेव (NAE) है, जो प्रशासनिक रूप से अंडमान और निकोबार कमान के अधीन है। इसका उपयोग मुख्य रूप से विमानन सहायता, निगरानी और रसद के लिए किया जाता है।

प्र. 3. LCA तेजस, पूसा डीएसटी-1 (Pusa DST-1), और डीआरआर धान 100 कमला (DRR Dhan 100 Kamala) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. LCA तेजस को आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत विकसित एक 4.5 पीढ़ी के मल्टी-रोल सुपरसोनिक लड़ाकू विमान के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
2. पूसा डीएसटी-1 (Pusa DST-1) CRISPR-Cas9 तकनीक का उपयोग करके बेहतर सूखा सहिष्णुता के लिए विकसित एक जीन-संपादित चावल की किस्म है।
3. डीआरआर धान 100 'कमला' (DRR Dhan 100 'Kamala') विशेष रूप से खारे तटीय पारिस्थितिक तंत्र (saline coastal ecosystems) के लिए विकसित भारत की पहली चावल की किस्म है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

1. **सही** – तेजस स्वदेशी रक्षा उत्पादन के तहत एचएएल (HAL) द्वारा विकसित एक 4.5 पीढ़ी का हल्का लड़ाकू विमान है।
2. **गलत** – पूसा डीएसटी-1 सूखे और लवणता सहिष्णु बासमती चावल की एक किस्म है जिसे पारंपरिक प्रजनन (conventional breeding) के माध्यम से विकसित किया गया है, CRISPR से नहीं।
3. **सही** – डीआरआर धान 100 'कमला' तटीय क्षेत्रों के लिए भारत की पहली उच्च उपज वाली लवणता-सहिष्णु चावल की किस्म है।

इसलिए, दो कथन सही हैं।

प्र. 4. मंगल ग्रह के भू-आकृतियों (Martian landforms) के लिए नए नामों को मंजूरी देने वाले अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ (IAU) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. IAU आकाशीय पिंडों और उनकी सतह की विशेषताओं को आधिकारिक नामकरण सौंपने के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त प्राधिकरण है।
2. नए अनुमोदित मंगल ग्रह के भू-आकृतियों के नाम अक्सर पृथ्वी की नदियों, शास्त्रीय पौराणिक कथाओं (classical mythology) और प्राचीन स्थानों के नामों से लिए जाते हैं।
3. भारत का गगनयान मिशन सीधे IAU के ग्रह प्रणाली नामकरण कार्य समूह (Working Group for Planetary System Nomenclature) के माध्यम से ग्रह की सतह के नामों को नामांकित करता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

1. सही – IAU ग्रहों की विशेषताओं के नामकरण के लिए एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय प्राधिकरण है।
2. सही – मंगल ग्रह की विशेषताएँ पृथ्वी की नदियों (घाटियों के लिए), शास्त्रीय पौराणिक कथाओं और प्राचीन कस्बों के नामों से ली जाती हैं।
3. गलत – अंतरिक्ष मिशन सीधे नाम नामांकित नहीं कर सकते हैं; प्रस्ताव IAU के वैज्ञानिक कार्य समूहों के माध्यम से जाते हैं, जो राष्ट्रीय मिशनों से स्वतंत्र होते हैं।

इस प्रकार, दो कथन सही हैं।

प्र. 5. भारत के हालिया रणनीतिक और वैज्ञानिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. IMF द्वारा पुनर्वर्गीकरण भारत की संप्रभु क्रेडिट धारणा (sovereign credit perception) और बाहरी क्षेत्र भेद्यता मूल्यांकन (external sector vulnerability assessment) को प्रभावित कर सकता है।
2. INS माहे अरब सागर क्षेत्र में भारत की समुद्री डोमेन जागरूकता (maritime domain awareness) को बढ़ाता है।
3. DRR धान 100 कमला तटीय भारत में मिट्टी की लवणता और घटती चावल उत्पादकता की दोहरी चुनौतियों का समाधान करता है।
4. IAU द्वारा अलौकिक विशेषताओं का नामकरण अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष कानून (international space law) के तहत सभी राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक

- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या:

1. सही – IMF वर्गीकरण बाहरी क्षेत्र जोखिम धारणा को प्रभावित करता है।
2. गलत – आईएनएस माहे लक्षद्वीप में स्थित है, मुख्य रूप से विमानन और रसद के लिए, न कि सीधे अरब सागर डोमेन जागरूकता के लिए।
3. सही – कमला किस्म लवणता-जनित उपज हानि का मुकाबला करने के लिए डिज़ाइन की गई है।
4. सही – अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष शासन (space governance) में वैज्ञानिक और कानूनी संदर्भ के लिए IAU नामकरण विश्व स्तर पर स्वीकृत है।

इसलिए, तीन कथन सही हैं।

प्र. 6. हाल ही में संरक्षण और पर्यटन विकास के लिए उजागर किया गया सिरपुर पुरातात्विक स्थल (Sirpur Archaeological Site) सही ढंग से कहाँ स्थित है:

- (a) ओडिशा – बैतरणी नदी के तट पर
- (b) छत्तीसगढ़ – महानदी नदी के तट पर
- (c) मध्य प्रदेश – नर्मदा नदी के किनारे
- (d) महाराष्ट्र – गोदावरी नदी के तट पर

उत्तर: (b)

व्याख्या:

सिरपुर छत्तीसगढ़ में महानदी नदी के तट पर स्थित है। यह 5वीं-8वीं शताब्दी ईस्वी से संबंधित एक महत्वपूर्ण बौद्ध और शैव पुरातात्विक परिसर है, जो पांडुवंशी राजवंश और प्राचीन भारत-दक्षिण पूर्व एशियाई व्यापार मार्गों से जुड़ा हुआ है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS पेपर 1

प्रश्न 1. हिमालयी अपवाह तंत्र के भूवैज्ञानिक विकास पर चर्चा करें और समझाएँ कि यह भारत के उत्तरी मैदानों के भू-आकृति विज्ञान और सामाजिक-आर्थिक जीवन को कैसे प्रभावित करता है। (250 शब्द)

मॉडल उत्तर:

हिमालयी अपवाह तंत्र दुनिया के सबसे जटिल और गतिशील नदी नेटवर्कों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे **भारतीय और यूरेशियाई प्लेटों के बीच टकराव** के कारण होने वाले दीर्घकालिक विवर्तनिक आंदोलनों और निरंतर जलोढ़ प्रक्रियाओं द्वारा आकार दिया गया है। इसका विकास हिमालय के निर्माण से निकटता से जुड़ा हुआ है।

एक **भूवैज्ञानिक दृष्टिकोण** से, कई हिमालयी नदियाँ **पूर्ववर्ती (antecedent)** प्रकृति की मानी जाती हैं, जिसका अर्थ है कि वे पर्वत श्रृंखलाओं के उत्थान से पहले अस्तित्व में थीं। सिंधु, सतलुज और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों ने धीरे-धीरे **वलित पर्वतों के उठने के साथ ही नीचे की ओर कटाव** करके अपने मूल मार्ग को बनाए रखा। इस ऊर्ध्वाधर कटाव के कारण हिमालयी क्षेत्र में **शानदार खड्डों (गॉर्ज)** का निर्माण हुआ और मैदानों में व्यापक अवसाद जमा हुआ। तलछट के निरंतर कटाव और परिवहन के साथ, नीचे की ओर विशाल जलोढ़ जमाव जमा हुआ, जिससे **भारत-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान** अस्तित्व में आया।

भू-आकृति विज्ञान की दृष्टि से, इस अपवाह तंत्र ने **उपजाऊ बाढ़ के मैदान**, प्राकृतिक तटबंध, **गोखुर झीलें (ox-bow lakes)** और व्यापक डेल्टा क्षेत्र बनाए हैं। हालांकि, सक्रिय अवसादन और बार-बार आने वाली बाढ़ भी **नदी चैनलों को विस्थापित** करती है, खासकर **कोसी** जैसी नदियों में, जिससे आवर्ती परिदृश्य अस्थिरता पैदा होती है।

सामाजिक-आर्थिक रूप से, हिमालयी नदियाँ उत्तरी भारत की **रीढ़** के रूप में कार्य करती हैं। वे सिंचाई के माध्यम से बड़े पैमाने पर **कृषि** का समर्थन करते हैं, घनी आबादी को बनाए रखते हैं, **अंतर्देशीय नेविगेशन** को सक्षम करते हैं, और विशाल **जलविद्युत क्षमता** प्रदान करते हैं। साथ ही, बाढ़, कटाव और गाद (siltation) विकास के लिए लगातार चुनौतियाँ पेश करते हैं।

निष्कर्ष:

इस प्रकार, हिमालयी अपवाह तंत्र ने उत्तरी भारत के भौतिक भूगोल और आर्थिक जीवन दोनों को आकार दिया है। विकास को आपदा लचीलापन और पर्यावरणीय स्थिरता के साथ संतुलित करने के लिए वैज्ञानिक नदी बेसिन प्रबंधन आवश्यक है।

GS पेपर 2

प्रश्न 2. यूरोपीय प्रवासन संकट मानवीय मूल्यों और राजनीतिक सामंजस्य दोनों की एक परीक्षा है। यूरोपीय संघ की एकता और विदेश नीति पर इस संकट के कारणों और परिणामों का समालोचनात्मक परीक्षण करें। (250 शब्द)

मॉडल उत्तर:

यूरोपीय प्रवासन संकट **यूरोपीय संघ (EU)** के लिए सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक और मानवीय चुनौतियों में से एक के रूप में उभरा, खासकर **2015 के बाद**, जब पश्चिम एशिया, अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्सों से बड़ी संख्या में शरणार्थी और प्रवासी पहुँचे।

इस संकट के **प्राथमिक चालक** में सीरिया और अफगानिस्तान में **लंबे समय तक चले गृहयुद्ध**, लीबिया और सूडान में **राजनीतिक अस्थिरता**, और अफ्रीका में **जलवायु परिवर्तन** से बढ़ी हुई बिगड़ती आर्थिक स्थितियाँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, संघर्ष क्षेत्रों से **भौगोलिक निकटता**, भूमध्य सागर में झरझरा समुद्री मार्ग, और संगठित तस्करी नेटवर्क ने यूरोप में **अनियमित प्रवासन** को तेज़ किया।

इस संकट के यूरोपीय संघ की **एकता** पर दूरगामी **परिणाम** हुए। मानवीय आवास की वकालत करने वाले पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्रों और अनिवार्य शरणार्थी साझाकरण का विरोध करने वाले पूर्वी यूरोपीय देशों के बीच **गहरा विभाजन** सामने आया। राष्ट्रवादी और दक्षिणपंथी राजनीतिक ताकतों के उदय ने **सर्वसम्मति-आधारित निर्णय लेने** को कमजोर कर दिया। शेंगेन समझौते की भावना को कमजोर करते हुए, कई देशों में **आंतरिक सीमा नियंत्रण** को अस्थायी रूप से फिर से लागू किया गया। इन घटनाक्रमों ने संघ के भीतर **सामूहिक जिम्मेदारी** के मूलभूत सिद्धांत पर दबाव डाला।

विदेश नीति के संदर्भ में, यूरोपीय संघ ने प्रवासी अंतर्वाह को रोकने के लिए तुर्की और लीबिया जैसे **पारगमन देशों के साथ समझौतों** में प्रवेश करके **बाहरीकरण रणनीतियों** पर तेजी से भरोसा किया। हालांकि इन सौदों ने आगमन को कम किया, लेकिन उन्होंने **मानवाधिकारों और शरणार्थी संरक्षण** के संबंध में गंभीर चिंताएँ उठाईं। अंतर्राष्ट्रीय मानवीय संगठनों के साथ संबंध भी तनावपूर्ण हो गए।

निष्कर्ष:

प्रवासन संकट ने नैतिक जिम्मेदारी और राजनीतिक व्यावहारिकता के बीच यूरोप के आंतरिक विरोधाभासों को उजागर कर दिया। दीर्घकालिक यूरोपीय संघ की स्थिरता के लिए एक समन्वित, अधिकार-आधारित और न्यायसंगत प्रवासन ढाँचे की आवश्यकता है।

GS पेपर 3

प्रश्न 3. भारत में कृषि ऋण पहुँच में सुधार करने में किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना के प्रभाव का मूल्यांकन करें। इसकी प्रभावशीलता में कौन सी चुनौतियाँ बाधा डालती रहती हैं? (250 शब्द)

मॉडल उत्तर:

किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना, जिसे 1998 में शुरू किया गया था, को फसल उत्पादन और संबद्ध गतिविधियों के लिए किसानों को **समय पर और किफायती संस्थागत ऋण** सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। इन वर्षों में, यह भारत की कृषि ऋण प्रणाली का एक **आधारशिला** बन गया है।

इस योजना ने जटिल ऋण प्रक्रियाओं को सरलीकृत परिक्रामी ऋण सुविधा से बदलकर ग्रामीण क्षेत्रों में औपचारिक ऋण पहुँच का विस्तार किया है। किसानों को भूमि जोत और फसल पैटर्न के आधार पर ऋण सीमा प्रदान की जाती है, जिससे लचीला उधार सुनिश्चित होता है। फसल बीमा और ब्याज सबवेंशन के साथ KCC का एकीकरण ने वित्तीय सुरक्षा को मज़बूत किया है। मत्स्य पालन और पशुपालन को हाल ही में शामिल करने से इसकी पहुँच और बढ़ गई है। डिजिटल KCC और RuPay एकीकरण ने लेनदेन की आसानी और पारदर्शिता को बढ़ाया है। परिणामस्वरूप, कई क्षेत्रों में साहूकारों पर निर्भरता कम हुई है।

हालांकि, कई संरचनात्मक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। KCC जारी करने में पर्याप्त क्षेत्रीय असंतुलन मौजूद है, जिसमें पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्य पीछे चल रहे हैं। किरायेदार किसान, मौखिक पट्टेदार, और भूमिहीन कृषक अक्सर कड़े भूमि-स्वामित्व आवश्यकताओं के कारण बाहर रहते हैं। डिजिटल निरक्षरता और कम वित्तीय जागरूकता इष्टतम उपयोग को कम करती है। कुछ मामलों में, धन को गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए मोड़ दिया जाता है, जिससे ऋणग्रस्तता बढ़ जाती है। स्वीकृति और नवीनीकरण में प्रक्रियात्मक देरी भी समय पर कृषि कार्यों को प्रभावित करती है।

निष्कर्ष:

जबकि KCC योजना ने ग्रामीण ऋण वितरण को बदल दिया है, इसकी पूरी क्षमता केवल किरायेदार किसानों को शामिल करने, तेज़ ऋण प्रसंस्करण, और मज़बूत वित्तीय साक्षरता और निगरानी तंत्र के माध्यम से ही साकार की जा सकती है।

GS पेपर 4

प्रश्न 4. "भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) केवल भावनाओं को समझने के बारे में नहीं है, बल्कि लोक सेवा वितरण के लिए उन्हें प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के बारे में है।" सिविल सेवकों के लिए निर्णय लेने, संघर्ष समाधान और नागरिक इंटरफ़ेस में EI के महत्व पर चर्चा करें। (250 शब्द)

मॉडल उत्तर:

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) स्वयं में और दूसरों में भावनाओं को रचनात्मक रूप से समझने, विनियमित करने और उपयोग करने की क्षमता को संदर्भित करती है। सिविल सेवकों के लिए, EI एक महत्वपूर्ण गुण है जो शासन में तकनीकी क्षमता का पूरक है।

निर्णय लेने में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशासकों को दबाव में शांत रहने में सक्षम बनाती है, खासकर प्राकृतिक आपदाओं या सार्वजनिक अशांति जैसे संकटों के दौरान। यह निष्पक्षता को बढ़ावा देता है, आवेगी प्रतिक्रियाओं को कम करता है, और सहानुभूति को तर्कसंगत सोच के साथ एकीकृत करके संतुलित निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करता है। उच्च EI वाले नेता तनावपूर्ण कार्य वातावरण में भी प्रेरणा और सहयोग सुनिश्चित करते हुए टीमों को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करते हैं।

संघर्ष समाधान में, EI सामाजिक, राजनीतिक, या प्रशासनिक तनावों से उत्पन्न होने वाले विवादों को संबोधित करने में निर्णायक भूमिका निभाता है। एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान अधिकारी सार्वजनिक शिकायतों को स्वीकार कर सकता है, सहानुभूतिपूर्ण जुड़ाव के माध्यम से शत्रुता को समाप्त कर सकता है, और संघर्षरत समूहों के बीच संवाद को सुविधाजनक बना सकता है। यह विशेष रूप से जातीय, सांप्रदायिक, या भूमि-संबंधी संघर्षों से प्रभावित क्षेत्रों में प्रासंगिक है।

नागरिक इंटरफ़ेस पर, EI प्रशासन और जनता के बीच विश्वास को मज़बूत करता है। दयालु संचार, सम्मानजनक व्यवहार, और कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता नैतिक और मानवीय सेवा वितरण सुनिश्चित करती है। विरोध प्रदर्शनों, आपदाओं, या सेवा विफलताओं के दौरान, भावनात्मक आत्म-नियंत्रण प्रशासकों को नागरिकों को अलग किए बिना सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने में मदद करता है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता सिविल सेवकों को केवल नियम-लागू करने वालों से मानवीय नेताओं में बदल देती है। सिविल सेवाओं में EI प्रशिक्षण को संस्थागत बनाना शासन की गुणवत्ता और सार्वजनिक विश्वास को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगा।

करेंट अफेयर्स

प्रश्न 5. भारत के रूफटॉप सौर मिशन और ऊर्जा संक्रमण लक्ष्यों के संदर्भ में पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के उद्देश्यों और चुनौतियों का समालोचनात्मक विश्लेषण करें। (250 शब्द)

मॉडल उत्तर:

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना, जिसे 2024 में लॉन्च किया गया था, एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य भारत के घरों के बीच रूफटॉप सौर को तेज़ करना है, जबकि बिजली की लागत को कम करना और भारत के स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण लक्ष्यों को आगे बढ़ाना है।

यह योजना सब्सिडी वाले रूफटॉप सौर इंस्टॉलेशन के माध्यम से लगभग एक करोड़ घरों को प्रति माह 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली प्रदान करने का लक्ष्य रखती है। यह 2030 तक 500 GW गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता प्राप्त करने और 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन के भारत के व्यापक संकल्प का समर्थन करती है। विकेंद्रीकृत बिजली उत्पादन को बढ़ावा देकर, इस योजना का उद्देश्य ट्रांसमिशन घाटे को कम करना, घरेलू ऊर्जा सुरक्षा को मज़बूत करना, और स्थापना, विनिर्माण और रखरखाव क्षेत्रों में रोज़गार पैदा करना है। प्रति घर ₹78,000 तक की वित्तीय सहायता और एक एकीकृत डिजिटल आवेदन पोर्टल प्रमुख सहायक सुविधाएँ हैं।

इसकी संभावना के बावजूद, कई चुनौतियाँ प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालती हैं। सार्वजनिक जागरूकता और घरेलू स्तर पर तकनीकी क्षमता सीमित रहती है। रूफटॉप स्वामित्व विवाद, खासकर शहरी अपार्टमेंट परिसरों में, इंस्टॉलेशन को जटिल बनाते हैं। DISCOMs सब्सिडी निपटान और नेट मीटरिंग दायित्वों के

कारण **वित्तीय तनाव** का सामना करते हैं। शहरी भीड़, छायादार छतें, और **ग्रिड एकीकरण बाधाएँ** आगे स्केलेबिलिटी को सीमित करती हैं। दूरदराज के क्षेत्रों में **कौशल की कमी** भी तैनाती को धीमा कर देती है।
निष्कर्ष:

हालांकि यह योजना भारत के ऊर्जा संक्रमण उद्देश्यों के साथ दृढ़ता से संरेखित है, इसकी सफलता समन्वित कार्यान्वयन, DISCOMs की वित्तीय स्थिरता, क्षमता निर्माण, और इसकी परिवर्तनकारी क्षमता को महसूस करने के लिए बड़े पैमाने पर जन जागरूकता पर निर्भर करती है।

